इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

शशांक चन्द्र सिद्धि अखण्ड सौभाग्यवती साधना

शरद पूर्णिमा – 25 अक्टूबर

प्रत्येक **सौभाग्यवती स्त्री** इस **साधना** को सम्पन्न करना अपना **धर्म** समझती है। इस **साधना** को सम्पन्न करने से **पत्नी** को **पूर्ण सौभाग्य** की प्राप्ति होती है। उसके **परिवार** से समस्त **आधि-व्याधि, अकाल मृत्यु** की **छाया** सामाप्त होती है तथा उसका पति **दीर्घायु** व **पत्नी** को **अर्द्धांगिनी** समझते हुए **पूर्ण सुख** प्रदान करता है। विशेष रुप से **कुमारी कन्याओं** को **सुयोग्य वर** प्राप्ति हेतु यह **अद्वितीय साधना** अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये।

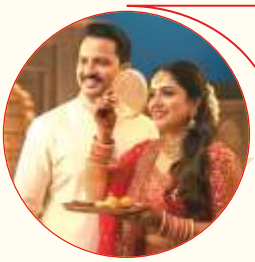

दाम्पत्य सुख-सौभाग्य वृद्धि करवा शक्ति साधना

करवा चतुर्थी पर्व – 29 अक्टूबर

इस **साधना** की **विवेचना** करने की कोई **आवश्यकता** नहीं है। नाम से ही **स्पष्ट** है कि इस **साधना** को सम्पन्न करने से **दाम्पत्य जीवन** में दोनों के बीच **तना-तनी, क्लेश, कलह, लड़ाई-झगड़ा, मन-मुटाव** आदि **द्वन्द्व** समाप्त हो जाते हैं। वहीं **पति** भी **प्रभावशाली व्यक्तित्व, पूर्ण पुरूषार्थ, श्रेष्ठ आचरण, स्वभाव, सद्गुणों** से युक्त **धन-धान्य** से **परिपूर्ण** बनाता है व **वैवाहिक जीवन** में सभी **सुख-समृद्धि, प्रेम, उल्लास, आनन्द, अठखेलियां, आत्मीयता, सम्मान,** प्राप्त करते हुये वह **अखण्ड सौभाग्यवती** बनी रहती है।

रूप अनंग सौन्दर्य वृद्धि साधना

सौन्दर्य चतुर्दशी – 08 नवम्बर

सौन्दर्य शब्द तो अपने आप में **जादू सा** असर दिखाता है। **संसार** में **शायद** ही कोई **स्त्री** या **पुरुष** होगा जो अपने आप को **सौन्दर्यमय** न देखना चाहता हो। इस **साधना** को यदि **पुरुष** सम्पन्न करे तो **सौन्दर्य, वीरता, ज्ञान, आत्मविश्वास, कार्य क्षमता, विपरीत परिस्थितियों** पर **नियंत्रण, लम्बा कद, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी दिव्य** और **तेजस्वी आंखें, उभरा वक्षस्थल, लम्बी मजबूत भुजायें, अपार साहस** आदि **स्वरुपों** को प्राप्त कर **पूर्ण पौरुषमय** कहलाता है। वहीं **स्त्री** द्वारा इस **साधना** को सम्पन्न करने से **सौन्दर्य** में **मधुरता, प्रफुल्लता** और **दिव्यता, दुबला, पतला** और मांसल शरीर तो प्राप्त करती ही हैं साथ ही ऐसे शरीर का निर्माण होता है जो अपने आप में खिले हुए **गौर वर्णिय गुलाब** के **सदृश** हो।

व्यापार कार्य वृद्धि लाभ पंचमी साधना

लाभ पंचमी – 14 नवम्बर

व्यक्ति पूर्व जन्म के **पाप, पितृ दोष, तांत्रिक प्रयोगों** तथा इस जन्म के **दुर्भाग्य** व **दुर्गति** के फलस्वरूप जीवन में **अवनति,** निरन्तर **आर्थिक हानि, व्यापार** में **अवृद्धि,** बराबर **ऋणमय कुस्थितियां, क्लिष्ठ रोगों** से **ग्रसित, बीमार** और **अशक्त** रहता है। उसे परिवार में किसी प्रकार का **सुख** नहीं मिलता। उसे चारों तरफ से **परेशानियां** घेरे रहती है। **शत्रु-भय** और **राज्य-भय** बराबर बना रहता है। इन्हीं **कुस्थितियों** को देखते हुये **ऋषियों** नें इस **साधना** के माध्यम से **सौभाग्य** जागृत करने का **विधान** ढूंढ निकाला। इस **साधना** को सम्पन्न करने से उक्त समस्त **कुस्थितियों** का **शमन** होता है तथा उसे **धन, यश, पूर्ण उन्नति, पूर्ण सुख** तथा **सौभाग्य की प्राप्ति** होती ही है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।